Vol 4 Issue 9 June 2015
ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Review Of Research
ISSN 2249-894X Impact Factor :3.1402(UIF)
Volume - 4 | Issue - 9 | June - 2015 Available online at www.ror.isrj.org

कार्य वातावरण के संदर्भ में संगठन की प्रकृति के आधार पर विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन

प्रीति शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान .

Co - Author Details :
महेश कुमार गंगल
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान .

सारांश
जब कार्य वातावरण अध्यापक के कार्यों को प्रभावित करता है तो किसी न किसी रूप में इसकी अध्यापकों की कार्यशैलियों के विनिश्चियन में भी भूमिका हो सकती है। जब विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली उनके कार्यव्यवहार को प्रभावित करती है तब क्या संगठन की प्रकृति के आधार पर राजकीय और निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र होती हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के उद्देश्य से शोधकर्ता द्वय ने कार्य वातावरण के संदर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का अध्ययन किया। 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक न्यादर्शन विधि' से चयनित अन्तिम न्यादर्श में कुल ८२६ अध्यापकों (३५० राजकीय तथा ४७६ निजी विद्यालयों में कार्यरत) सहित को न्यादर्श में लिया गया। अध्यापकों के कार्य वातावरण का अध्ययन करने के लिए 'अध्यापक कार्य वातावरण अनुसूची' तथा विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन करने के लिए 'अध्यापक कार्य शैली अनुसूची' का उपयोग किया गया। सांख्यकीय प्रविधि काई वर्ग परीक्षण के आधार पर निष्कर्षतः पाया गया कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के प्रति प्रदत्त वरीयताओं को छोड़कर शेष सभी कार्यशैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) तथा संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों के प्रति वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं।

प्रयुक्त शब्दावली: कार्य वातावरण, कार्य शैली, संगठन प्रकृति, राजकीय एवं विद्यालयीन अध्यापक.

Article Indexed in :
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

प्रस्तावना :

कार्य वातावरण को उस वातावरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें अध्यापक कार्य करता है और जो उसके कार्य को सम्भव बनाता है। यह संसाधनों, परिस्थतियों, सम्बन्धों की गुणवत्ता, वरीयता, समय, कार्यस्थल आदि के साथ वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वृत्तिक क्षेत्र से जुड़े अनेक पहलुओं पर निर्भर करता है। स्मिथ (२००२) ने बताया कि संगठनों को उच्च सहभागिता वाली गतिविधियों को प्रोत्साहित करके ऐसा कार्य वातावरण बनाना चाहिए जो कार्यकर्ताओं में कार्य संतुष्टि के स्तर को ऊँचाई पर ले जाने के लिए कार्यकर्ताओं की क्षमता में वृद्धि, चिन्तन की स्वतंत्रता, संलग्नता कार्यस्थल में संलग्नता और ऊर्जा का संचार कर सके। मिश्रा (२०१४) के अनुसार विद्यालय में प्रबन्धकों के समक्ष कई प्रश्न या चुनौतियाँ होती हैं यथा- उनके सहकर्मी दबाव की स्थितियों में कैसे कार्य करते हैं? कौनसा अध्यापक शीघ्रता से कार्य को समझ लेता है और किसकी विरोध वृत्ति उच्च है? कौनसा अध्यापक कार्य अवधि में उपयुक्त अथवा तत्क्षणीय निर्णय लेने में सक्षम है? अपने समूह के सदस्यों को अभिप्रेरित करने की अपेक्षित रीति क्या होगी? अध्यापकों की कार्यशैलियों का वस्तुनिष्ठ ज्ञान होने पर प्रबन्धक इन चुनौतियों का बखूबी सामना करते हुए बेहतर प्रबन्धन कर सकते हैं। गर्ग (१९८३) ने पाया कि अध्यापकों के वृत्तिक उत्तरदायित्व के स्तर पर विद्यालय के राजकीय व निजी होने का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शर्मा (२००८) के अनुसार सामान्य शिक्षा विद्यालयों में संगठन की प्रकृति के सन्दर्भ में अध्यापकों की विविध कार्यशैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता पायी जाती है। कुमावत (२०११) के अनुसार संस्कृत विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संगठन की प्रकृति के सन्दर्भ में सभी कार्यशैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं है। दोनों अध्ययनों में जिन कार्यशैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता है उनमें भी विविध कार्यशैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताएँ बिल्कुल एक जैसी नहीं हैं।

कार्यशैलियों में व्यक्ति की जैविक-शारीरिक संरचना, मस्तिष्क कार्यात्मकता, संवेदी रूपात्मकता, शारीरिक आवश्यकता, वातावरणीय वरीयता, सामाजिक पक्ष तथा व्यावसायिक अभिवृत्तियों जैसे शैली अनुबन्धित तत्वों का समावेश होने के कारण सटीक सूचनाऐं प्राप्त हो सकती हैं। अध्यापक को अपने शक्तिशाली पक्षों, नमनीयताओं, ग्राह्यताओं/स्वीकार्यता और अवांछनाओं का पता होने पर वह विशिष्ट, प्रायोगिक सलाह, स्वयं के विकास के लिए कार्ययोजना एवं व्यक्तिगत परिवेक्षण प्रणाली विकसित करने में मदद मिल सकती हैं। कार्यशैलियों में व्यक्ति की जैविक-शारीरिक संरचना, मस्तिष्क कार्यात्मकता, संवेदी रूपात्मकता, शारीरिक आवश्यकता, वातावरणीय वरीयता, सामाजिक पक्ष तथा व्यावसायिक अभिवृत्तियों जैसे शैली अनुबन्धित तत्वों का समावेश होने के कारण सटीक सूचनाऐं प्राप्त हो सकती हैं।

जब कार्य वातावरण अध्यापक के कार्यों को प्रभावित करता है तो किसी न किसी रूप में इसकी अध्यापकों की कार्यशैलियों के विनिश्चियन में भी भूमिका हो सकती है। संगठन की प्रकृति के आधार पर राजकीय और निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु भारत या विदेश में सम्पन्न हुआ कोई अध्ययन शोधकर्ता द्वय को प्राप्त नहीं हुआ। जब विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली उनके कार्यव्यवहार को प्रभावित करती है तब क्या संगठन की प्रकृति के आधार पर राजकीय और निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र होती हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के उद्देश्य से शोधकर्ता द्वय ने कार्य वातावरण के संदर्भ में संगठन की प्रकृति के आधार पर विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन किया।

शोध परिकल्पना

कार्य वातावरण के सन्दर्भ में राजकीय और निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं के अध्ययन के लिए स्वतंत्रता की परिकल्पना 'राजकीय तथा निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं' का विकास किया गया।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यानुसार स्वतन्त्र चर राजकीय और निजी विद्यालयीन अध्यापकों कार्य वातावरण के सन्दर्भ में आश्रित चर विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का विश्लेषण एवं वर्णन करने के लिए शोधकर्ता द्वय द्वारा सर्वेक्षण अध्ययन की वर्णनात्मक विधि 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या एवं न्यादर्श

राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में शैक्षणिक सत्र २०१०-२०११ में कार्यरत अध्यापकों में से न्यादर्श को पक्षपात रहित व जनसंख्या का पूर्ण प्रतिनिधि बनाने के लिए विद्यालयों को पहले ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में स्थित विद्यालयों के रूप में तथा तत्पश्चात् संगठन की प्रकृति के आधार पर पुनः दो भागों राजकीय व निजी विद्यालयों में वर्गीकृत किया गया। इस प्रकार 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक न्यादर्शन विधि' से चयनित अन्तिम न्यादर्श में कुल ८२६ अध्यापकों (३५० राजकीय तथा ४७६ निजी विद्यालयों में कार्यरत) सहित को न्यादर्श में लिया गया है।

अध्ययन उपकरण

स्वतंत्र चर राजकीय तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य वातावरण का अध्ययन करने के लिए शोधार्थी द्वारा विकसित एवं प्रमापीकृत 'अध्यापक कार्य वातावरण अनुसूची' का उपयोग किया गया है। इस अनुसूची में ग्यारह कारकों/तत्वों- कार्यस्थल की सामान्य स्थिति, संस्था से लगाव, लक्ष्य सहमति, कार्यकर्ताओं में परस्पर सम्मान, संसाधनों की पर्याप्तता, वृत्तिक अभिरुचि, साथी एवं विद्यार्थी के बीच सहयोग, कार्य दबाव मुक्तता, सशक्तीकरण, नवाचार उन्मुखता एवं संस्था का नेतृत्व में से प्रत्येक के लिए ७-७ पदों सहित कुल ७७ पद हैं। आश्रित चर विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन करने के लिए शर्मा (२००८) द्वारा विकसित एवं प्रमापीकृत 'अध्यापक कार्य शैली अनुसूची' का उपयोग किया गया है। इस अध्यापक कार्यशैली अनुसूची के द्वारा अध्यापकों की कुल नौ (९) द्वि-ध्रुवीय कार्य शैलियों के प्रति अध्यापकों की व्यक्तिगत वरीयताओं की जानकारी प्राप्त होती है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

संगठन की प्रकृति के आधार पर 'राजकीय तथा निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं' इस रूप में सभी नौ कार्यशैलियों पर अध्यापकों की वरीयताओं का अध्ययन करने के लिए विकसित समेकित सारणी के भाग रूप में ३×२ की तालिकाएँ निर्मित करते हुए कार्य वातावरण के सन्दर्भ में प्रत्येक कार्यशैली के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं के काई वर्ग के मानों का परिकलन किया गया है।

प्रदत्त प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

कार्य वातावरण के सन्दर्भ में राजकीय तथा निजी विद्यालयीन अध्यापकों द्वारा प्रत्येक कार्यशैली के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं का पृथक्-पृथक् परिकलन कर समेकित रूप में परिकल्पना परीक्षण किया गया है।

सारणी 1
संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के संदर्भ में अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का वितरण

क्र. सं.	कार्यशैली	राजकीय						निजी					
		सहयोगी		मिश्रित		असहयोगी		सहयोगी		मिश्रित		असहयोगी	
		ध्रुव 1	ध्रुव 2	ध्रुव 1	ध्रुव 2	ध्रुव 1	ध्रुव 2	ध्रुव 1	ध्रुव 2	ध्रुव 1	ध्रुव 2	ध्रुव 1	ध्रुव 2
1.	विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक	130	64	75	45	22	14	148	67	100	84	42	38
2.	उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त	143	51	69	51	32	4	182	33	143	41	45	35
3.	क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित	85	109	72	48	20	16	112	103	67	117	73	7
4.	लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान	27	167	29	91	11	25	32	183	55	129	25	55
5.	नमनीय बनाम अनमनीय	162	32	68	52	17	19	129	86	88	96	6	74
6.	अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैरकेन्द्रित	145	49	97	23	28	8	137	78	76	108	13	67
7.	वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष	31	163	39	81	22	14	50	165	63	121	34	46
8.	वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक	19	175	42	78	8	28	58	157	72	112	70	10
9.	दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक	42	152	27	93	14	22	50	165	61	123	72	8
कुल अध्यापक		194		120		36		215		184		80	
		350						479					

सारणी 2
संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के संदर्भ में अध्यापकों की कार्यशैलियाँ

क्र. सं.	कार्यशैलियाँ	काई वर्ग का परिकलित मान	
		राजकीय अध्यापक	निजी अध्यापक
1.	विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक	0.909*	11.314**
2.	उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त	16.216**	26.794**
3.	क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित	8.169**	67.29**
4.	लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान	8.408**	15.784**
5.	नमनीय बनाम अनमनीय	36.248**	64.782**
6.	अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित	1.569*	56.865**
7.	वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष	35.559**	11.922**
8.	वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक	11.922**	88.664**
9.	दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक	5.137*	113.248**
मुक्तांश 2 व 0.05 के विश्वास स्तर पर काई वर्ग का सारणी मान = 5.991			

*सार्थक नहीं **सार्थक

उपर्युक्त सारणी १ में संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के संदर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का वितरण तथा सारणी २ में राजकीय एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों द्वारा कार्य वातावरण के सन्दर्भ में विभिन्न कार्यशैलियों पर दी गयी वरीयताओं के परिकलित काई वर्गमानों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। इन में से सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों द्वारा प्रदत्त विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के प्रति वरीयताओं के परिकलित काई वर्ग मानों को छोड़कर अन्य सभी कार्यशैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) के परिकलित काई वर्ग मान .०५ के विश्वास स्तर एवं मुक्तांश २ के सारणी मान से अधिक हैं। निजी विद्यालयों के अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक) के प्रति प्रदत्त वरीयताओं का परिकलित काई वर्ग मान .०५ के विश्वास स्तर एवं मुक्तांश २ के सारणी मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'राजकीय तथा निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र होती हैं' राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की केवल विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के लिए स्वीकृत होती है और राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शेष सभी कार्यशैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक) के लिए अस्वीकृत होती है। इसलिए शोध परिकल्पना 'राजकीय तथा निजी विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं' राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की केवल विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के लिए अस्वीकृत होती है और राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शेष सभी कार्यशैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक) के लिए स्वीकृत होती है।

इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के प्रति प्रदत्त वरीयताओं को छोड़कर शेष सभी कार्यशैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) तथा संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम

अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक) के प्रति वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं।

निष्कर्ष–विवेचना एवं निहितार्थ

संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के प्रति प्रदत्त वरीयताओं को छोड़कर शेष सभी कार्यशैलियों (उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) तथा संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक) के प्रति वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं। साथ ही सम्बन्धित सारणी १ में सहयोगी, मिश्रित और असहयोगी तीनों ही प्रकार के कार्य वातावरण वाले राजकीय एवं निजी विद्यालयीन अध्यापकों द्वारा विभिन्न कार्यशैलियों पर प्रदत्त वरीयताओं का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि सहयोगी, मिश्रित और असहयोगी तीनों ही प्रकार के कार्य वातावरण वाले विद्यालयीन अध्यापक विश्लेषणात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण, क्षेत्र स्वतंत्र, दीर्घ सातत्य प्रधान कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं। इससे यह पता चलता है कि तीनों प्रकार के कार्य वातावरण वाले राजकीय एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में लक्ष्य के प्रति उन्मुखता अधिक होती है। आन्तरिक रूप से अभिप्रेरित होने पर ये अधिक सीखते हैं। ये अध्यापक किसी व्यवस्था/प्रणाली के भागों पर विचार करते हुए यह समझने का प्रयास करते हैं कि यह भाग किस प्रकार मिलकर कार्य करते हुए बड़े पैमाने पर प्रभाव डालते हैं। ये अध्यापक बड़ी तस्वीर या समग्र विचार में से अंश या अंशों पर गौर करते हैं। विश्लेषणात्मक एवं तार्किक चिन्तन करते हुए विस्तार के साथ एकदम ठीक काम करते हैं। अपने प्रदर्शन का बारीकी से विश्लेषण करते हैं। कार्य वातावरण से सम्बन्धित आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर पाते हैं। समूह में कार्य आधारित जोखिम उठाने वाले होते हैं। मस्तिष्क क्रियाकलाप के फलस्वरूप अधिक तर्क संगत चरणबद्ध सूचनाओं को वरीयता देते हैं; सूचना ग्रहण अथवा प्रदान करते वक्त पूरी प्रक्रिया को चरणबद्ध ढंग से लेते हैं व अधिक व्यवस्थित होते हैं। ये अध्यापक स्वयं को सौंपे गये काम के साथ इस तरह से सम्बद्ध कर लेते हैं कि कार्य की सफलता उनका अपना लक्ष्य बन जाता है। इस तरह लक्ष्योन्मुख होकर कार्य मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं स्थितियों पर गम्भीरता से विचार करते हैं तथा कार्य के लिए आवश्यक संसाधनों एवं क्षमताओं की प्राप्ति कर स्वयं को व्यवस्थित करने का प्रयत्न करते हैं। कार्य की पूर्ति के क्रम में अतिरिक्त समय एवं श्रम देकर कार्य करते हैं। कार्य करते समय नियम प्रतिनियमों का ध्यान रखना पंसद करते हैं और हमेशा वही करते हैं जो नियमानुसार सही है। कार्य का उचित रीति एवं ठीक समय से पूर्ण होना इनका उद्देश्य होता है। एक बार कार्य को स्वीकार करने के बाद ये अपने पूर्ण सामर्थ्य एवं प्रयास से कार्य करते हैं चाहे कोई उनका पर्यवेक्षण करे या न करे। कार्य से सम्बन्धित समस्याओं या संदेहों का निवारण करने के लिए सक्षम अध्यापक या व्यक्तियों के निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं। सामान्यतः इन अध्यापकों का कार्य कार्यस्थिति की संरचना से प्रभावित होता है। ये एक स्पष्ट मार्गदर्शन, आकल्पन अथवा ढाँचें के अन्तर्गत कार्य करने को वरीयता नहीं देते हैं। सम्प्रत्ययों की प्राप्ति एवं अन्तरण के लिए परिकल्पना परीक्षण उपागम को अपनाते हैं। विद्यार्थी इन्हें सिद्धान्तों को लागू करने के लिए प्रोत्साहन देने वाले के रूप में प्रत्यक्षीकृत करते हैं। अधिगम वातावरण के संगठन एवं मार्गदर्शन करने की क्षमता इसका सुदृढ़ पक्ष होता है। ये अपनी समालोचना से बहुत कम प्रभावित होते हैं। स्वपरिभाषित लक्ष्य एवं पुनर्बलन का उपयोग करते हुए स्वयं की संरचना का आकल्पन करने के लिए उत्प्रेरित करते हैं। ये अध्यापक दीर्घ अवधि

तक चलने वाले कार्यक्रमों, गतिविधियों, कार्यों में अधिक उत्साह के साथ कार्य कर पाते हैं। एक बार कार्य आरम्भ कर देने के पश्चात् जब तक उसे पूरा नहीं करते हैं तब तक किसी अन्य कार्य को करना पसन्द नहीं करते हैं। ऐसे अध्यापक किसी कार्य की पूर्ति के लिए लम्बी बैठक दे सकते हैं तथा इन्हें बीच-बीच में आहार, पेय पदार्थ, मनोरंजन आदि की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। दिन के समय विशेष का इनकी कार्य क्षमता पर उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता है।

राजकीय विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी, मिश्रित और असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक जहाँ अभिप्रेरणा केन्द्रित और गैर वैयक्तिक कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं वहीं निजी विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी, मिश्रित और असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक वातावरण निरपेक्ष को अधिक वरीयता देते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी, मिश्रित और असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक आन्तरिक या बाह्य या दोनों कारकों से अभिप्रेरित होकर स्वेच्छा से कार्य करते हैं। ये कार्य स्थितियों से अधिकाधिक अवसर जुटाने के लिए स्वतः उत्साहित रहते हैं। ये बेहतर कार्य निष्पत्ति के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करते हैं। कार्य की सफलता इन्हें और अधिक प्रोत्साहित होकर अधिक ऊर्जा के साथ कार्य करने को प्रेरित करती है। असफलता का भय यद्यपि इन्हें प्रभावित कर सकता है तथापि अभिप्रेरणा के बलवती होने पर ये अपने आपको कार्यरत रख पाने में सफल हो जाते हैं। ये अकेले कार्य करने की तुलना में दल, युग्म या समूह में कार्य करने को वरीयता देते हैं। इनकी मान्यता होती है कि समूह की विशेषताएँ कार्य प्रदर्शन में सुधार लाती है जिससे कार्य सम्पादन में सहजता आती है। व्यक्तिगत रूप से प्राप्त लक्ष्य की तुलना में सामूहिक लक्ष्य के प्रति अधिक सक्रिय होते हैं। समूह में कार्य दिये जाने पर बेहतर कार्य परिणाम दे पाते हैं। समूह में वैयक्तिक पहचान के प्रति गम्भीर नहीं होते हैं। समूह केन्द्रित गतिविधियों, शिक्षण विधियों, कार्य पद्धतियों के प्रति गम्भीर होते हैं तथा सामूहिक प्रतिपुष्टि एवं पुनर्बलन से लाभान्वित होते हैं। दूसरी ओर निजी विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी, मिश्रित और असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापकों को अपने कार्य वातावरण में किसी विशेष प्रकार के औपचारिक वातावरण (ध्वनि स्तर, प्रकाश, बैठक व्यवस्था, सामग्री एवं सुविधाओं) की उपलब्धता आदि की आवश्यकता नहीं होती है। औपचारिक वातावरण का होना या ना होना इनके कार्य निष्पादन पर विशेष प्रभाव नहीं रखता है। 'जो जहाँ जैसा है वो ठीक है' इनका मूल मंत्र हो सकता है इसलिए सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता की प्राप्ति के लिए इनकी सक्रियता कम होती है। ये कार्यस्थल के वातावरण से अप्रभावित या कम प्रभावित होकर कार्य जारी रख सकते हैं।

राजकीय विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी और मिश्रित कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक नमनीय, वातावरण निरपेक्ष और दृश्यात्मक कार्यशैलियों को अधिक वरीयता देते हैं। वहीं निजी विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी और मिश्रित कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक गैर वैयक्तिक और श्रवणात्मक कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी और मिश्रित कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक कार्य-स्थिति में क्रिया अथवा प्रतिक्रिया करने से पूर्व बहुत सा सार्थक एवं उत्पादक चिन्तन करते हैं। सामान्यतः कार्य समस्या के परम्परागत समाधानों से संतुष्ट नहीं होते हैं तथा नवीन या मौलिक या अद्वितीय प्रतिक्रिया करते हुए समाधान तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। कार्य में विविधता, चुनौती एवं परिवर्तन प्रियता के कारण प्रधानाचार्य एवं अधिकारियों का अन्धानुकरण नहीं करते हैं यदि एक ही कार्य इन्हें दुबारा करना पड़े तो भी ये पूर्व प्रयुक्त क्रियाविधि को नहीं अपना पाते हैं। यदि कभी इन्हें उसी रीति या उपागम से कार्य करना पड़े तब ये सामान्यतः अपने आपको असहज पाते हैं। फलतः अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं दे पाते हैं। इसलिए ये कार्य अथवा समस्या-समाधान की नवीन या स्वयं द्वारा अप्रयुक्त विधि का अनुप्रयोग करने को वरीयता देते हैं। इन्हें अपने कार्य वातावरण में किसी विशेष प्रकार के औपचारिक वातावरण (ध्वनि स्तर, प्रकाश, बैठक व्यवस्था, सामग्री एवं सुविधाओं) की उपलब्धता आदि की आवश्यकता नहीं होती है। औपचारिक वातावरण का होना या ना होना इनके कार्य निष्पादन पर विशेष प्रभाव नहीं रखता है। 'जो जहाँ जैसा है वो ठीक है' इनका मूल मंत्र हो सकता है इसलिए सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता की प्राप्ति के लिए इनकी सक्रियता कम होती है। ये कार्यस्थल के वातावरण से अप्रभावित या कम प्रभावित होकर कार्य जारी रख सकते हैं। ये कार्य स्थितियों में पढ़ी जा सकने वाली सूचनाओं को महत्व देते हैं। लिखित निर्देशों का अनुपालन करना इनके लिए सहज होता है।

तस्वीरों या चित्रों या मुद्रित सामग्री को देख कर या प्रयुक्त करने से स्वयं को बेहतर ढंग से व्यक्त कर पाते हैं। दृश्य सामग्री इनकी कल्पना को निर्देशन देती है। कक्षा में दृश्य सामग्री के उपयोग को वरीयता देते हैं। अमूर्त की तुलना में मूर्त चिन्तन करते समय सहजता का अनुभव करते हैं।

वहीं निजी विद्यालयों में कार्यरत सहयोगी और मिश्रित कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक अकेले कार्य करने की तुलना में दल, युग्म या समूह में कार्य करने को वरीयता देते हैं। इनकी मान्यता होती है कि समूह की विशेषताएँ कार्य प्रदर्शन में सुधार लाती है जिससे कार्य सम्पादन में सहजता आती है। व्यक्तिगत रूप से प्राप्त लक्ष्य की तुलना में सामूहिक लक्ष्य के प्रति अधिक सक्रिय होते हैं। समूह में कार्य दिये जाने पर बेहतर कार्य परिणाम दे पाते हैं। समूह में वैयक्तिक पहचान के प्रति गम्भीर नहीं होते हैं। समूह केन्द्रित गतिविधियों, शिक्षण विधियों, कार्य पद्धतियों के प्रति गम्भीर होते हैं तथा सामूहिक प्रतिपुष्टि एवं पुनर्बलन से लाभान्वित होते हैं। ये अच्छे श्रोता होते हैं तथा सुनी हुई सूचना को याद रखना एवं सम्प्रेषित करना इनके लिए सहज होता है। मौखिक निर्देशों को ज्यादा वरीयता देते हैं और नवीन जानकारियों के आदान-प्रदान के लिए विचार-विमर्श को वरीयता देते हैं। प्रायः इनमें अमूर्त चिन्तन की क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। कक्षा स्थितियों में श्रव्य सामग्री उपयोग को वरीयता देते हैं।

राजकीय विद्यालयों में कार्यरत असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक जहाँ अनमनीय, वातावरण सापेक्ष एवं श्रवणात्मक कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं वहीं निजी विद्यालयों में कार्यरत असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक वैयक्तिक और दृश्यात्मक कार्यशैली को अधिक वरीयता देते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक अध्यापक औपचारिक वातावरण (रोशनी, ध्वनि, तापमान, बैठने की व्यवस्था, सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता आदि के प्रति ज्यादा संजीदा होते हैं। कार्य करते समय या कठिन समस्याओं पर विचार करते समय बिल्कुल शान्ति या खामोशी को पसन्द करते हैं। वांछित प्रकाश एवं तापमान इन्हें एकाग्रता बनाने में सहायता देता है। कार्यस्थल पर उपलब्ध विभिन्न सामग्री एवं सुविधाओं की अनुपलब्धता इनके कार्य को नकारात्मक ढ़ंग से प्रभावित करती है। इसलिए ये सामग्री एवं सुविधाओं की प्राप्ति के लिए सक्रिय होते हैं। इनकी कार्यस्थल के वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्तिगत मान्यता होती है। कभी-कभी ये वातावरणीय वरीयताओं के प्रति इतने दृढ़ हो सकते हैं कि एक भी वातावरणीय तत्व के अनुकूल न होने पर इनका कार्य निष्पादन प्रभावित हो जाता है। ये अच्छे श्रोता होते हैं तथा सुनी हुई सूचनाओं को याद रखना एवं सम्प्रेषित करना इनके लिए सहज होता है। मौखिक निर्देशों को ज्यादा वरीयता देते हैं और नवीन जानकारियों के आदान-प्रदान के लिए विचार-विमर्श को वरीयता देते हैं। प्रायः इनमें अमूर्त चिन्तन की क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। कक्षा स्थितियों में श्रव्य सामग्री उपयोग को वरीयता देते हैं। दूसरी ओर निजी विद्यालयों में कार्यरत असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक कार्य करते समय स्व केन्द्रित होते हैं। ऐसे अध्यापक सामूहिक रूप से प्राप्त लक्ष्य की तुलना में व्यक्तिगत रूप से प्राप्त लक्ष्य के प्रति अधिक सक्रियता का प्रदर्शन करते हैं। अकेले कार्य करने का अवसर दिये जाने पर आनन्दित व एकाग्रचित्त होकर कार्य करते हैं। सामूहिक कार्य में अपनी भूमिका के प्रति संवेदनशील होते हैं तथा भूमिका का स्पष्ट परिभाषीकरण चाहते हैं। अध्यापक उन्मुख होने के कारण इनके अनुसार समूह की कमियाँ/विविधताएँ कार्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। इन्हें अपनी क्षमताओं पर अधिक विश्वास होता है। कार्य पूर्ण होने पर व्यक्तिगत प्रदर्शन को रेखांकित करने पर बल देते हैं। निर्वैयक्तिक शिक्षण स्थितियों जैसे-व्याख्यान को वरीयता देते हैं। शिक्षक केन्द्रित अधिगम वातावरण के प्रति गम्भीर होते हैं। व्यक्तिगत प्रतिपुष्टि एवं पुनर्बलन से प्रभावित होते हैं। ये कार्य स्थितियों में पढ़ी जा सकने वाली सूचनाओं को महत्व देते हैं। लिखित निर्देशों का अनुपालन करना इनके लिए सहज होता है। तस्वीरों या चित्रों या मुद्रित सामग्री को देख कर या प्रयुक्त करने से स्वयं को बेहतर ढंग से व्यक्त कर पाते हैं। दृश्य सामग्री इनकी कल्पना को निर्देशन देती है। कक्षा में दृश्य सामग्री के उपयोग को वरीयता देते हैं। अमूर्त की तुलना में मूर्त चिन्तन करते समय सहजता का अनुभव करते हैं।

यहाँ यह विशेषतः उल्लेखनीय है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत मिश्रित एवं असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापकों की तुलना में निजी विद्यालयों में कार्यरत मिश्रित एवं असहयोगी कार्य

वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक अनमनीय और अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्यशैलियों को अधिक वरीयता देते हैं। इससे यह पता चलता है कि निजी विद्यालयों में कार्यरत मिश्रित एवं असहयोगी कार्य वातावरण वाले अधिकांश अध्यापक समय, स्थान एवं कार्य के तरीके के प्रति दृढ़ होते हैं। इनकी समय, स्थान एवं कार्य के तरीके के प्रति विशेष पसन्द या नापसंद होती है। ये प्रधानाचार्य एवं अन्य अधिकृतियों द्वारा प्रदत्त निर्देशों या कार्ययोजना का अक्षरशः पालन करते हैं। नवीन कार्य स्थितियों में प्रधानाचार्य या अधिकृतियों द्वारा निर्दिष्ट उपागम या अपने द्वारा पूर्व में अपनायी गयी रीति या उपागम से कार्य करने को वरीयता देते हैं। कभी–कभी ये इतने दृढ़ हो सकते हैं कि प्रचलित/पारम्परिक युक्ति के इतर कार्य करना पसन्द नहीं करते हैं। इन अध्यापकों में न तो इतनी आन्तरिक अभिप्रेरणा होती है जो उन्हें कार्य आरम्भ करने के लिए प्रेरित कर सके या कार्य में बनाये रख सके और नहीं इन पर नियमित बाह्य अभिप्रेरणा का कोई विशेष प्रभाव होता है। दूसरे शब्दों में ऐसे अध्यापकों में अभिप्रेरणा की कमी होती है। फलतः ये कम से कम कार्य करना चाहते हैं। इनमें कार्य स्थितियों से लाभ प्राप्ति के प्रति उत्साह नहीं रहता है। उच्च उपलब्धि एवं प्रशंसा इनके प्रदर्शन को प्रभावित नहीं कर पाती है। 'कार्य करना है इसलिए कर रहे हैं' इनका सूत्र बन जाता है। इन्हें कार्य के लिए प्रेरणा देने के लिए विशेष प्रोत्साहक की आवश्यकता होती है और सामान्यतः यह प्रोत्साहक कोई बाह्य कारक ही बनता है। इस प्रकार अध्यापकों की इस शैलीगत विशिष्टता का उपयोग करते हुए कार्य क्षेत्र में उत्पादकता को बढ़ावा जा सकता है। साथ ही अवसरानुकूल कार्य शैली का चयन करने हेतु उपयुक्त दक्षता विकास के लिए अध्यापक अध्यापकों एवं शोधकर्ताओं को उपयुक्त अभ्यासों/कार्यक्रमों का विकास करना चाहिए। स्वयं अध्यापक उपयुक्त शैली का उपयोग करने के लिए संवेदनशीलता विकसित करने के लिए उपयुक्त चेष्टाएँ कर सकते हैं।

संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित और दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के प्रति प्रदत्त वरीयताओं को छोड़कर शेष सभी कार्यशैलियों (उतरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक) तथा संगठन की प्रकृति के आधार पर कार्य वातावरण के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की सभी कार्यशैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक) के प्रति वरीयताएँ उनके कार्य वातावरण से स्वतंत्र नहीं होती हैं। इस निष्कर्ष से प्रत्यक्षतः सम्बद्ध या असम्बद्ध होने वाला कोई शोध अध्ययन शोधकर्ता द्वय को प्राप्त नहीं हुआ है। हालांकि सामान्य विद्यालयों में अध्यापकों की कार्यशैलियों का प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त कार्यशैली सूची का उपयोग करते हुए शर्मा (२००८) ने पाया कि संगठन की प्रकृति के सन्दर्भ में राजकीय एवं निजी स्कूल के अध्यापकों की अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरण गैर केन्द्रित एवं वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जाती है, जबकि संगठन की प्रकृति के सन्दर्भ में राजकीय एवं निजी स्कूल के अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता पायी जाती है। इन दोनों अध्ययनों के निष्कर्षों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि शर्मा (२००८) द्वारा किये गये अध्ययन व प्रस्तुत अध्ययन में अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैली के प्रति अध्यापकों की वरीयता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया हैं एवं उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष कार्यशैली पर अध्यापकों की वरीयताएँ सार्थक रुप से भिन्न पायी गयी है। पूर्व निष्कर्ष की तुलना में विद्यालयों में अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं में विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय एवं दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैली पर सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी है। प्रस्तुत

अध्ययन का यह निष्कर्ष विद्यालयों में अध्यापकों के सन्दर्भ में विशिष्ट है। शोधकर्ता द्वय अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श पर, अन्य उपकरण प्रयोग/प्रविधि प्रयोग द्वारा निष्कर्ष जाँच का सुझाव प्रस्तुत करती है।

सन्दर्भ सूची

१.कुमावत, जयनारायण (२०११), संस्कृत विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन; अप्रकाशित पीएच.डी. शोध-प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

२.गर्ग, एन. के. (१९८३), ए स्टडीज ऑफ टीचर्स प्रोफेशनल रेसपोन्सीबिलिटी इन रिलेशन टू एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाइल्स एण्ड आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट एट सैकेण्डरी लेवल, पीएच.डी, एड्यूकेशन, इण्डिन एड्यूकेशनल रिव्यू, १५ (१), ३६-३९.

३.मिश्रा, मुरलीधर (२०१४), अध्यापकों की कार्यशैली : स्वयं अध्यापक एवं विद्यालय प्रबन्धन के लिए निहितार्थ, रिव्यू ऑफ रिसर्च, ४ (२), नवम्बर, १-१२.

४.शर्मा, मनोज कुमार (२००८), विभिन्न वैयक्तिक कारकों के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन; अप्रकाशित पीएच.डी. शोध-प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

५.सेरेफ्फ, लिसा (२००८), डिसइवोवल्ड : दा स्टोरीज नोवाइस टीचर्स, टीचिंग एण्ड टीचर एड्यूकेशन, वॉल्यूम २४ (५), १३१७-१३३२.

६.स्मिथ, जी. (२००२), लीडर्स एनर्जाइज एण्ड इंगेज दा वर्कफोर्स, ऑफिस सोल्यूशन्स, १९(७), २०.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org